शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF EDUCATION

भारतीय भाषा समिति
Bharatiya Bhasha Samiti

शैक्षिक अध्ययन विभाग
शिक्षा संकाय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली

भारतीय भाषा समिति

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

द्वारा संपोषित

कार्यशाला

भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन

22-24 फ़रवरी, 2023

आयोजक
शैक्षिक अध्ययन विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

आयोजन स्थल

ओल्ड हॉल, शैक्षिक अध्ययन विभाग

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

तीन दिवसीय गैर आवासीय कार्यशाला
22-24 फ़रवरी, 2023

भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन
(Research and Academic Writing in Indian Languages)

संपोषक
भारतीय भाषा समिति (शिक्षा विभाग, भारत सरकार)

संदर्भ

प्राचीन काल से भारत ज्ञान को बहुत महत्व देता है। बौद्धिक ग्रंथों, पांडुलिपियों, विचारकों और स्कूलों के बड़े समूह में ज्ञान के कई आयाम हैं, साथ ही ज्ञान का पता लगाने और इसे प्राप्त करने का तरीका भी है। इसलिए ज्ञान का खजाना विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है। कला, साहित्य, परंपराओं, रीति-रिवाजों, भाषाओं, वास्तुकला आदि के माध्यम से इसका अभ्यास किया गया और इसे अगली पीढ़ियों तक पहुंचाया गया। हालाँकि, जब अनुसंधान की बात आती है, तो इनमें से कई क्षेत्र एक ओर अनुसंधान में उचित प्रशिक्षण की कमी के परिणामस्वरूप अनछुए रह जाते हैं, और दूसरी ओर अनुसंधान के सैद्धांतिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती है, जो शिक्षार्थियों को सिद्धांत को व्यवहार में अनुवाद करने के लिए बहुत कम अवसर प्रदान करते हैं । इस प्रकार, भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन पर कार्यशाला के रूप में शिक्षार्थियों के व्यावहारिक आधारित उन्मुखीकरण की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा गुणवत्ता उन्नयन और समावेशन कार्यक्रम (EQUIP: पंचवर्षीय विजन प्लान 2019-24), भारत सरकार इस बात पर जोर देती है कि भारत में शिक्षा की गुणवत्ता को ऊपर उठाने के लिए एक ओर अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, दूसरी ओर, शिक्षण-अधिगम संस्थानों को स्वयं को शिक्षण और अनुसंधान में उन्नत करने की आवश्यकता है। यह 'अनुसंधान की गुणवत्ता वैश्विक मानकों को विकसित करने का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रकार, उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान को प्रोत्साहित करने और भावी शिक्षकों को अपने समय का कुछ हिस्सा पुनरीक्षण, पुन: निर्माण और नए ज्ञान में समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इस प्रकार, शिक्षार्थियों की अगली पीढ़ी, उनके प्रोफाइल और आवश्यकताओं को एनईपी-2020 और भारत सरकार के ईक्यूयूआईपी दस्तावेज़ के अनुसार परिकल्पित और विकास के साथ संबोधित करने की आवश्यकता है। इस परिदृश्य में, भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों को नए शिक्षार्थियों की उभरती जरूरतों, भविष्य के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए गुणवत्ता को सुधारना होगा और एनईपी 2020 की दृष्टि के साथ दुनिया में सबसे अच्छे और प्रतिभाशाली लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन से संबंधित अधिकांश अकादमिक चर्चाएँ अंग्रेजी माध्यम से अपनी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्वानों के सैद्धांतिक भाग के इर्द-गिर्द घूमती हैं। यह भारतीय भाषाओं के उन विद्वानों को पीछे धकेलता है जो शोध और अकादमिक लेखन के मामले में हाशिये पर रहते हैं। यह एनईपी 2020 के दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता है, जिसमें भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया गया है। गुणवत्ता अनुसंधान के साथ सामने आने के लिए अनुसंधान में बदलते प्रतिमान को अच्छी तरह से समझने की बहुत आवश्यकता है। प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका पर जोर (यूनेस्को: 1953) और एनईपी 2020 द्वारा भारतीय भाषा के लिए विशेष प्रावधानों ने यह आवश्यक बना दिया है कि अनुसंधान प्रतिमान की बारीकियों को भारतीय भाषाओं में समझा जाना चाहिए। भारतीय भाषा में अनुसंधान प्रतिमान पर सत्र भी शिक्षार्थियों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करने और उन्हें अपनी भाषा पर गर्व करने में मदद करेगा। इस प्रकार, वर्तमान कार्यशाला अपनी अवधारणा में अनूठी है जहां यह प्रतिभागियों को कई हाथों की गतिविधियों के माध्यम से अपनी शिक्षा को प्रदर्शित करने और स्पर्शपूर्ण सीखने के परिणाम के साथ सामने आने का पर्याप्त अवसर प्रदान करेगी।

मुख्य उद्देश्य

भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन पर तीन दिवसीय कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को मूल रूप से भारतीय भाषा में शोध के विचारों को स्पष्ट करना, गुणवत्तापूर्ण शोध पत्र और लेख लिखना और इसे गुणवत्ता शोध जर्नल में प्रकाशित करना है ताकि मौलिकता को भारतीय और साथ ही वैश्विक पाठकों तक पहुंचाएं। यह उम्मीद की जाती है कि भारतीय भाषाओं के आसपास का भारतीय ज्ञान शिक्षा के भारतीयकरण की दिशा में समझ को बदलने में मदद करेगा। कार्यशाला के कुछ विशिष्ट उद्देश्य निम्नानुसार हैं:

- भारतीय भाषा में अनुसंधान और अकादमिक लेखन के प्रति प्रतिभागियों का सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना
- शिक्षा के भारतीयकरण की दिशा में NEP 2020 के विजन को साकार करने में मदद करना
- गुणवत्तापूर्ण शोध पत्र को स्पष्ट करने और लिखने के लिए प्रतिभागियों को अकादमिक लेखन की बारीकियों को समझने के लिए तैयार करना
- विस्तृत अनुसंधान परियोजना के विकास में विशेषज्ञता विकसित करना
- प्रकाशन के लिए गुणवत्ता शोध पत्रिकाओं को चुनने में विशेषज्ञता विकसित करना
- उच्च शिक्षा के शिक्षकों को तैयार करने और उनके प्रशिक्षण के संदर्भ में आवश्यक बदलती भूमिका को समझना
- उच्च शिक्षा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के विद्वानों के लिए आवश्यक उपयुक्त कौशल, क्षमताओं और विशेष शिक्षा को समझने के लिए और उन संदर्भों में आवश्यक उपयुक्त पाठ्यचर्या और शैक्षणिक परिवर्तन

उप-विषय

- अनुसंधान प्रतिमान
- अनुसंधान में मिश्रित तरीके
- सांख्यिकीय निष्कर्ष
- गुणात्मक अनुसंधान के मूल सिद्धांत
- अकादमिक लेखन की बारीकियों को समझना
- विषयगत शोध रिपोर्ट कैसे लिखें
- अकादमिक पेपर लिखने पर हैंड्स-ऑन कार्यशाला
- विस्तृत अनुसंधान परियोजना के विकास पर व्यावहारिक कार्यशाला
- एमओओसी (MOOC) पाठ्यक्रम के डिजाइनिंग और विकास पर व्यावहारिक कार्यशाला
- अपने शोध को प्रकाशित करने योग्य कैसे बनाया जाए, इस पर हैंड्स-ऑन वर्कशॉप
- सीखने के परिणामों पर प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुति

भारतीय भाषा समिति के बारे में

भारतीय भाषा समिति, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के पत्र संख्या 8-46/2021/एल-द्वितीय, दिनांक 15 नवंबर, 2021 द्वारा भारतीय भाषाओं के प्रचार के लिए एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन किया गया है। इसका अधिदेश समिति राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में परिकल्पित भारतीय भाषाओं के समग्र और बहु-विषयक विकास के मार्गों का पता लगाने और सिफारिश करने के लिए होगी। समिति को मौजूदा भाषा शिक्षण और अनुसंधान के पुनरोद्धार और देश में विभिन्न संस्थानों में इसके विस्तार से संबंधित सभी मामलों पर मंत्रालय को सलाह देने का कार्य भी सौंपा गया है। इसे सौंपे गए कार्यों को करने के लिए, उच्चाधिकार प्राप्त समिति उप-समितियों/अध्ययन समूहों की नियुक्ति कर सकती है। समिति भारतीय भाषाओं के प्रचार की आवश्यकता पर प्रकाश डालने के लिए सेमिनार, कार्यशाला, सम्मेलन और वेबिनार आयोजित कर सकती है। यह केंद्र/राज्य सरकार के शिक्षण, अनुसंधान और भाषाओं के विस्तार/संवर्धन से संबंधित किसी भी संस्थान के साथ बातचीत और समन्वय भी करता है।

जामिया मिलिया इस्लामिया के बारे में

जामिया मिलिया इस्लामिया केंद्रीय विश्वविद्यालयों में भारत का पहला प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है और वैश्विक मंचों पर सबसे तेजी से बढ़ते भारतीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है। इसने **2022** में प्रमुख प्रगति की है, जिसमें इसकी एनआईआरएफ रैंकिंग शामिल है, जहां यह भारत के शीर्ष तीन विश्वविद्यालयों में शामिल है, एनएएसी से मान्यता प्राप्त ए++ ग्रेड **(2021),** यूपीएससी में अखिल भारतीय रैंक **1,** छात्रों का शानदार प्रदर्शन, शिक्षकों का प्रतिष्ठित आगंतुक पुरस्कार और जेसीबी पुरस्कार आदि। विश्वविद्यालय की घातीय वृद्धि हमें अपनी ख्याति को देखने और शिक्षा और शोध में बदलते रुझानों के साथ बने रहने की मांग करती है। जामिया एक बहु-विषयक विश्वविद्यालय है जो शिक्षण, सीखने और अनुसंधान के विविध क्षेत्रों में **10** संकायों, **44** विभागों और उच्च अध्ययन और अनुसंधान के **30** केंद्रों और **7** स्कूलों के साथ कार्यक्रम पेश करता है। हाल ही में विश्वविद्यालय ने अपनी उपलब्धियों में एक और उपलब्धि हासिल की है जिसमें दुनिया भर में शीर्ष पर कई संकायों को उनके शोध में उद्धृत किया गया है। जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना **1920** में अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत में राष्ट्रवादियों के एक समूह द्वारा की गई थी। **1925** में, इसका परिसर अलीगढ़ से दिल्ली स्थानांतरित हो गया और मौजूदा वर्तमान परिसर की आधारशिला **1** मार्च **1930** को रखी गई। शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार कार्य के क्षेत्र में इसके योगदान को स्वीकार करते हुए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग **(UGC),** भारत सरकार ने इसे **1962** में "डीम्ड विश्वविद्यालय" का दर्जा दिया। बाद में **1988** में इसे केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में नामित किया गया। . राष्ट्र निर्माण और शिक्षा के क्षेत्र में जामिया मिलिया इस्लामिया के योगदान को स्वीकार करते हुए, रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार विश्वविद्यालय को "देश के सबसे प्रगतिशील शैक्षणिक संस्थानों में से एक" कहा था। जामिया मिलिया इस्लामिया **1920** में अपनी स्थापना के बाद से विभिन्न बाधाओं और चुनौतियों का सामना कर चुका है और भारत में केंद्रीय विश्वविद्यालयों में खुद को पहले साबित कर चुका है।

शिक्षा संकाय के बारे में

जामिया मिलिया इस्लामिया में शिक्षा संकाय भारत के सबसे पुराने और उच्चतम शैक्षणिक विभागों में से एक है और इसमें दो विभाग हैं। यह तीन भाषाओं यानी हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू में अपना कार्यक्रम पेश करता है।

(1) *शैक्षिक अध्ययन विभाग,* शिक्षा में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करता है और मुख्य रूप से अपने कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों, शैक्षिक योजनाकारों को तैयार करता है। यह पीएचडी (शिक्षा) एमएड, एम.ए. (शैक्षिक योजना और प्रशासन) और शिक्षा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीईएम) प्रदान करता है।

(2) *शिक्षक प्रशिक्षण और गैर-औपचारिक शिक्षा विभाग (शिक्षा में उन्नत अध्ययन संस्थान)* पीएच.डी. (शिक्षा), एम.ए. (शिक्षा), एम.एड. (विशेष शिक्षा), बी.एड.(सामान्य), बी.एड. (विशेष शिक्षा), बी.एड. (नर्सरी), और डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन (D.El.Ed.) प्रोग्राम।

जामिया मिलिया इस्लामिया में शिक्षा संकाय को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग की योजना के तहत स्कूल ऑफ एजुकेशन भी प्रदान किया गया है। इसकी ऐतिहासिक विरासत के तहत बेसिक शिक्षा की योजना के अनुसार बेसिक स्कूलों के शिक्षकों के प्रशिक्षण के उद्देश्य से 1938 में डॉ. जाकिर हुसैन के प्रेरक नेतृत्व में उस्तादों का मदरसा (शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान) की स्थापना की गई थी। इसने शिक्षा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के साथ-साथ शिक्षा में अनुसंधान का भी आयोजन किया। इसके अलावा, 1980 में जामिया मिलिया इस्लामिया में फैकल्टी स्ट्रक्चर की शुरुआत के साथ, तत्कालीन टीचर्स कॉलेज का नाम बदलकर फैकल्टी ऑफ एजुकेशन कर दिया गया।

शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF EDUCATION
सत्यमेव जयते

भारतीय भाषा समिति
Bharatiya Bhasha Samiti

शैक्षिक अध्ययन विभाग
शिक्षा संकाय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली

भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन पर तीन दिवसीय गैर आवासीय कार्यशाला
22-24 फ़रवरी, 2023

भारतीय भाषा समिति, भारत सरकार द्वारा संपोषित

संरक्षक
प्रो नजमा अख्तर,
कुलपति
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

संरक्षक
प्रो. नाजिम हुसैन जाफरी,
कुलसचिव
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

समन्वयक
डॉ. सज्जाद अहमद
शैक्षिक अध्ययन विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

एचओडी
डॉ. अरशद इकराम अहमद,
शैक्षिक अध्ययन विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

अकादमिक समन्वयक
डॉ चंदन श्रीवास्तव,
भारतीय भाषा समिति

डीन
प्रो सारा बेगम, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया

आयोजक
शैक्षिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

संपर्क
डॉ. सज्जाद अहमद
समन्वयक
शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया
मोबाइल: 9873961336
ईमेल: sahmad34@jmi.ac.in

कार्यशाला कार्यक्रम अनुसूची

दिन	सत्र	विषय / थीम
दिन 1 कार्यशाला	सत्र 1 10:00- 11:30	उद्घाटन सत्र मुख्य अतिथि: प्रो नीरा नारंग, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय मुख्य नोट: प्रो अरविंद झा, इग्नू- (अनुसंधान प्रतिमान) सत्र की अध्यक्षता: प्रो सारा बेगम, डीन, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली सम्मानित अतिथि: डॉ चंदन श्रीवास्तव, अकादमिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति अतिथियों का सम्मान: डॉ. अरशद इकराम अहमद, एचओडी, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया सत्र समन्वयक: डॉ. सज्जाद अहमद, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया
	सत्र-2 11:30- 1:00	अनुसंधान में मिश्रित तरीके मुख्य वक्ता: प्रो सरोज यादव, पूर्व डीन एकेडमिक्स, एनसीईआरटी सत्र समन्वयक: इशिता चुग, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-3 2:00- 3:30	सांख्यिकीय निष्कर्ष मुख्य वक्ता: डॉ. गुलफाम, एनसीईआरटी सत्र समन्वयक: अनिल कुमार, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-4 3:30-5:00	गुणात्मक अनुसंधान की बारीकियां मुख्य वक्ता: डॉ. मोना सेडवाल, एनआईईपीए सत्र समन्वयक: वंदना, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
दूसरा दिन कार्यशाला	सत्र 1 10:00- 11:30	विस्तृत अनुसंधान परियोजना के विकास पर व्यावहारिक कार्यशाला मुख्य वक्ता: डॉ. अजय कुमार सिंह, इग्नू सत्र समन्वयक: फरिहा सिद्दीकी, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-2 11:30- 1:00	विषयगत शोध रिपोर्ट कैसे लिखें मुख्य वक्ता: प्रो. लोकनाथ मिश्र, एचओडी, शिक्षा विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय सत्र समन्वयक: पारुल जुल्का, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-3 2:00- 3:30	एमओओसी (MOOC) पाठ्यक्रम के डिजाइनिंग और विकास पर व्यावहारिक कार्यशाला मुख्य वक्ता: डॉ विमल रढ, खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय सत्र समन्वयक: दर्शिता पंत, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-4 3:30-5:00	अकादमिक लेखन की बारीकियों को समझना मुख्य वक्ता: प्रो. उषा शर्मा, एन.सी.ई.आर.टी सत्र समन्वयक: सबा यास्मीन पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
तीसरा दिन कार्यशाला	सत्र 1 10:00- 11:30	अकादमिक पेपर लिखने पर हैंड्स-ऑन कार्यशाला मुख्य वक्ता: प्रो. कुमार सुरेश, एनआईईपीए सत्र समन्वयक: अर्शी आलम, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-2 11:30- 1:00	अपने शोध को प्रकाशित करने योग्य कैसे बनाया जाए, इस पर हैंड्स-ऑन वर्कशॉप मुख्य वक्ता: प्रो. एस. के. यादव, पूर्व एचओडी, शिक्षक शिक्षा, एनसीईआरटी सत्र समन्वयक: सिराजुद्दीन, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-3 2:00- 3:30	सीखने के परिणामों पर प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता: प्रो. निरंजन सहाय, हिंदी विभाग वाराणसी सत्र समन्वयक: मुजम्मिल अखलाक, पीएच.डी. स्कॉलर, डी.ई.एस., जा.मि.ई.
	सत्र-4 3:30-5:00	विदाई सत्र मुख्य अतिथि: प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर, एमजीएएचवी, वर्धा सत्र की अध्यक्षता: डॉ. अरशद इकराम अहमद, एचओडी, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली धन्यवाद प्रस्ताव: डॉ. सज्जाद अहमद, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया

संपोषक:
भारतीय भाषा समिति (शिक्षा विभाग, भारत सरकार)